अध्याय 17

अय्यूब का उत्तर (भाग 2)

''मेरे लिए कब्र तैयार है'' (17:1, 2)

1''मेरा प्राण निकलने पर है, मेरे दिन पूरे हो चुके हैं; मेरे लिये कब्र तैयार है। 2निश्चय जो मेरे संग हैं वे ठट्ठा करनेवाले हैं, और उनका झगड़ा रगड़ा मुझे लगातार दिखाई देता है।''

आयत 1. मूल भाषा में अय्यूब ने छह लघु शब्दों में अपनी गहरी निराशा को व्यक्त किया। उसका **प्राण** मसला गया था, और उसके **दिन** ठहर चुके थे (देखें 7:6; 9:25; 10:20)। और तो और **कब्र** उसकी राह देख रही थी। ''कब्र'' शब्द वास्तव में बहुवचन (*q^{e}barim, क़ेबारिम*) है और इसा अनुवाद ''कब्रिस्तान'' हो सकता है (NJPSV)।

आयत 2. ठट्ठा करने वाले (*h^{a}thullim, हथुल्लिम*) सम्भवतया एलीपज, सोपर और बिलदद ही थे। अय्यूब ने कहा कि वह उनके लिए हंसी का पात्र हो गया था (12:4) और उन्होंने उसकी ''नामधराई'' की थी (16:10)। और तो और **उनका झगड़ा रगड़ा उसे दिखाई देता** जा रहा था। इस भाषण में पहले परमेश्वर के सामने ''आंसू बहाने'' के कारण अय्यूब की ''आंखें'' काली पड़ गईं थीं (16:16, 20)।

''मेरा ज़ामिन कौन है?'' (17:3-5)

3''ज़मानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही ज़ामिन हो; कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे? 4तू ने इनके मन को समझने से रोका है, इस कारण तू इनको प्रबल न होने देगा। 5जो लूट के भाग के लिये अपने मित्रों की चुगली खाता है, उसके लड़कों की आँखें अंधी हो जाएँगी।''

आयत 3. अय्यूब के मित्र उसे तसल्ली नहीं दे पाए थे, इस कारण अय्यूब ने अपना **ज़ामिन** होने के लिए सीधे परमेश्वर के सामने विनती की। विलियम डी. रेबर्न ने समझाया है: ''*ज़ामिन* कोई मित्र या रिश्तेदार होता है जो कैदी को छुड़ाने और उसके अच्छे आचरण की गारंटी देने के लिए पैसे से ज़मानत देता है।''[1] ''ज़ामिन'' शब्द का अनुवाद क्रिया शब्द *thaqa'* (*थाक़ा*) से हुआ है जिसका अर्थ समझौते पर दस्तखत करने के समय सौदा पक्का करके ''हाथ मिलाना'' (देखें KJV; NJB; NJPSV) है। जॉन ई. हार्टले के अनुसार अपने मुकद्दमे की राह देखते हुए अय्यूब स्वर्गीय अदालत के सामने आने के लिए अपने दु:खों से छुटकारा पाने के लिए परमेश्वर के सामने निवेदन कर रहा था। ''ज़मानत'' परमेश्वर द्वारा ही अपने आपको दी जानी थी, जो उसकी करुणा और न्याय के बीच तनाव का कारण थी।[2]

आयत 4. अय्यूब ने मित्रों को ऐसे **मन** वाले लोग बताया जिसे **समझने से रोका** गया था। मित्र के साथ उनके अन्याय का दण्ड उन्हें मिलना था।

आयत 5. अय्यूब ने अपने मित्रों से करुणा की उम्मीद की थी (6:14), परन्तु उसे ऐसा लगा जैसे उसके साथ छल हुआ हो। उसके बचाव के लिए ''ज़मानत'' देने के बजाय (17:3), उन्होंने **लूट के भाग के** पाने के लिए उसके विरुद्ध गवाही दे दी। उनके पाप का असर उनके **लड़कों** पर पड़ना था। बहुत से विद्वान आयत 5 को प्राचीन कहावत मानते हैं (देखें TEV)।

''परमेश्वर ने मुझे घृणा का पात्र बना दिया है'' (17:6-16)

6''उसने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं; और लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं।
7खेद के मारे मेरी आँखों में धुंधलापन छा गया है, और मेरे सब अंग छाया के समान हो
गए हैं। 8इसे देखकर सीधे लोग चकित होते हैं, और जो निर्दोष हैं, वे भक्तिहीन के विरुद्ध
भड़क उठते हैं। 9तौभी धर्मी लोग अपना मार्ग पकड़े रहेंगे, और शुद्ध काम करनेवाले
सामर्थ्य पर सामर्थ्य पाते जाएँगे। 10तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ, परन्तु मुझे
तुम लोगों में एक भी बुद्धिमान न मिलेगा। 11मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरी योजनाएँ
मिट गईं, और जो मेरे मन में था, वह नष्ट हुआ है। 12वे रात को दिन ठहराते; वे कहते हैं,
अन्धियारे के निकट उजियाला है। 13यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा,
यदि मैं ने अन्धियारे में अपना बिछौना बिछा लिया है, 14यदि मैं ने सड़ाहट से कहा, 'तू मेरा
पिता है,' और कीड़े से कि, 'तू मेरी माँ', और 'मेरी बहिन है,' 15तो मेरी आशा कहाँ रही?
मेरी आशा किस के देखने में आएगी? 16क्या वह अधोलोक में उतर जाएगी? क्या उस
समेत मुझे भी मिट्टी में विश्राम मिलेगा?''

आयत 6. **''उसने ऐसा किया कि सब लोग मेरी उपमा देते हैं।''** कुछ अनुवादकों को यह वाक्य भाववाचक लगता है: ''किसी ने मुझे उपमा बना दिया है'' या ''मैं तो कहावत बन गया हूं।'' NASB में संकेत है कि यहां पर कर्त्ता परमेश्वर है। ''उपमा'' इब्रानी मूल शब्द *mashal* (*माशाल*) से लिया गया है जिसका अनुवाद ''लोकोक्ति,'' ''दृष्टांत,'' ''सयानों का कहा'' हो सकता है। भजन संहिता 44:14 में ''उपमा'' को सिर हिलाने को ''जग हंसाई'' से मिलाया गया। अय्यूब ने आगे कहा, **''और लोग मेरे मुँह पर थूकते हैं।''** ''थूकना'' घोर अपमान था और आज भी है (व्यवस्थाविवरण 25:9; यशायाह 50:6; मत्ती 26:67)।

आयत 7. पहला अलंकार (**''मेरी आँखों में धुंधलापन छा गया है''**) पुराने नियम में एक और जगह मिलता है (उत्पत्ति 27:1; व्यवस्थाविवरण 34:7; 1 शमूएल 3:2)। परन्तु दूसरा (**''मेरे सब अंग छाया के समान हो गए हैं''**) केवल यहीं मिलता है। TEV में इसे इस प्रकार लिखा गया है, ''मेरी भुजाएं और टांगें परछाई की तरह पतली हैं।'' अय्यूब की आंखों का धुंधलापन और उसके अंगों का कमज़ोर पड़ना उसके **खेद** के कारण था।

आयत 8. सीधे लोग वे हैं जो परमेश्वर की नज़र में सीधा काम करते हैं। **निर्दोष** वे लोग हैं जो ''शुद्ध'' और ''दोषरहित'' हैं।[3] **भक्तिहीन** लोग सांसारिक और अधार्मिक लोग हैं (8:13 पर टिप्पणियां देखें)। आयत 8 का तात्पर्य यह है कि धर्मी लोग वैसे ही **चकित होंगे** जैसे अय्यूब

प्रताड़ित हो रहा था और वह अपने दुष्ट सताने वालों के विरुद्ध अपने बचाव में आ गया था।

आयत 9. शुभ काम करने वाले इस बात का प्रतीक थे कि कोई **धर्मी** है (9:30; 22:30; भजन संहिता 18:20, 24; 24:4; 26:6; 73:13)। रॉबर्ट एल. आल्डन ने कहा है कि ''विश्वास के इस परोक्ष वाक्य में अय्यूब ने अपनी ही बात की।''[4] हार्टले ने लिखा है कि ''उसकी धार्मिकता उसे सही मार्ग में चलते रहने के लिए साहस देती है चाहे विरोध कितना भी जबर्दस्त क्यों न हो। उसे परमेश्वर से कोई चीज़ अलग नहीं करती, न पीड़ा, न गालियां, न अपमान और न ही मृत्यु।''[5]

आयत 10. ''तुम सब के सब मेरे पास आओ तो आओ, परन्तु मुझे तुम लोगों में एक भी बुद्धिमान न मिलेगा।'' यह मित्रों को एक लगने वाली डांट थी। उन्होंने अय्यूब को अपने जवाब में समझदारी नहीं दिखाई थी।

आयत 11. अय्यूब को अपनी वर्तमान परिस्थिति का परिणाम केवल मृत्यु ही दिखाई दे रहा था। उसने खेद जताया कि उसके **दिन** जाते रहे थे (देखें 17:1) और वे **योजनाएं** जो उसने बनाई थीं और **जो** [उसके] **मन में था**, सब बिखर गया था। अन्य शब्दों में उसकी बहुत सी आशाएं और सपने थे जो अधूरे रह गए थे।

आयत 12. ''वे रात को दिन ठहराते; वे कहते हैं, अन्धियारे के निकट उजियाला है।'' इस आयत का अर्थ अस्पष्ट और विवादित है। एक व्याख्या यह है कि ''वे'' अय्यूब के आशावादी विचारों को कहा गया है जो अच्छे ''दिन'' आने की उम्मीद लगाए बैठे थे। एक और व्याख्या यह है कि ''वे'' अय्यूब के मित्रों को कहा गया है जिन्होंने ज़ोर दिया कि यदि वह मन फिरा ले तो परमेश्वर उसके दिन लौटा देगा (5:17-26; 8:20-22; 11:13-19)। अय्यूब का वर्तमान ''अंधियारा'' ''प्रकाश'' से दूर हो जाना था (11:17)। इस बाद वाले विचार की सम्भावना अधिक लगती है।[6]

आयतें 13, 14. इन आयतों की पंक्तियों से सशर्त वाक्य का ''यदि'' वाला भाग (शर्निया उपवाक्य) बनता है जबकि आयतें 15 और 16 के अलंकारिक प्रश्न ''दो'' वाला भाग (उपसंहार वाला) है। अपने पिछले भाषणों में अय्यूब ने चाहा था कि उसे मृत्यु आ जाए जिससे उसे दुःखों से छुटकारा मिल जाए (3:21; 7:15)। यहां पर उसने **अधोलोक** में जाने और वहां अपना **धाम** बनाने की कल्पना की। उसने **अंधियारे में अपना बिछौना बिछा** लेना था।

सड़ाहट (*shachath, शाक़ाथ*) या ''कब्र'' (TEV) शब्द का इस्तेमाल ''अधोलोक'' (शियोल) के पर्यायवाची के रूप में हुआ है। **कीड़ा** (*rimmah, रिम्माह*) सड़ने और गलने का प्रतीक है; इसका भोजन मुर्दे होते हैं जब तक वे खत्म नहीं हो जाते (7:5; 21:26; 24:20)।[7] यशायाह 14:11 कहता है, ''कीड़े तेरा बिछौना और केचुए तेरा ओड़ना हैं।'' अय्यूब ने ''सड़ाहट'' और ''कीड़े'' को अपना परिवार बना लेना था क्योंकि मरने के बाद उसके पास और कोई नहीं होना था।

आयत 15. ''तो मेरी आशा कहाँ रही? मेरी आशा किस के देखने में आएगी?'' अय्यूब ने पहले शिकायत की थी कि उसके ''दिन जुलाहे की ढरकी से अधिक फुर्ती से चलनेवाले हैं और निराशा में बीते जाते हैं'' (7:6)। फिर उसने यह भी माना, ''वह मुझे घात करेगा, मुझे कुछ आशा नहीं; तौभी मैं अपनी चाल चलन का पक्ष लूँगा'' (13:15)।

आयत 16. ''क्या वह अधोलोक में उतर जाएगी? क्या उस समेत मुझे भी मिट्टी में

विश्राम मिलेगा?'' इन प्रश्नों में यह पूछा जा रहा है कि क्या मृत्यु से सारी आशा खत्म हो जाती है। मसीही होने के नाते हम जानते हैं कि ऐसा नहीं होगा। पौलुस ने घोषणा की:

> अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें (रोमियों 5:1, 2)।

पतरस ने जोड़ा, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया'' (1 पतरस 1:3)। यूहन्ना ने कहा, ''और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है'' (1 यूहन्ना 3:3)। कोई आश्चर्य नहीं कि हमारी आशा ''हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और पर्दे के भीतर तक पहुंचता है'' (इब्रानियों 6:19)।

प्रासंगिकता

''मेरा प्राण निकलने को है'' (अध्याय 17)

नीतिवचन 15:13 कहता है कि ''मन के दु:ख से आत्मा निराश होती है।'' मसीह के सुसमाचार के सब सेवकों को ऐसे लोगों को जिनके मन दु:खी हों, जिनकी समस्याएं बहुत अधिक हों और जिनके दिल टूटे हुए हों, समझाने के बहुत अवसर मिलते हैं। एक बार मैंने किसी यूनिवर्सिटी टाउन में प्रचार किया और यूनिवर्सिटी के छात्र ने मुझे यह पत्र लिखा:

> काश आपको पता होता कि यहां क्या चल रहा है। जिन्दगी बड़ी उधेड़बुन में है। ... मेरे परिवार के लोग मुझे _____ । ... में भेजने का खर्च नहीं उठा सकते। मैं _____ में वापस नहीं जा सकता। क्यों कि मेरी दोस्ती बिल्कुल खत्म हो गई है। ... मेरे पास अपने रिश्तेदारों के पास जाने के लिए भाड़ा नहीं है ... और मैं यहां _____ में रहना नहीं चाहता क्योंकि मैंने यहां पर बहुत सी गलतियां की हैं। ... मुझे कई दिमागी परेशानियां और तकलीफें हो गई हैं; मुझे उपचार की और दवाइयों की आवश्यकता है जिसके लिए मेरे पास पैसे नहीं है। इसलिए ... मुझे समझ में नहीं आता कि अब क्या करूं। सच कहता हूं कि मैं हार मान चुका हूं। ऐसा लगता है जैसे कोई और रास्ता ही नहीं है। मैं इतनी अनिश्चितताओं में रहकर ज़िंदा नहीं रह सकता। कृपया सलाह दें। ...

इस जवान को जिसका दिल टूटा हुआ है और वह हार मान चुका है क्या सलाह दी जानी चाहिए? अध्याय 17 में अय्यूब की लगभग ऐसी ही स्थिति थी। अय्यूब के मित्र उसे अच्छी सलाह क्या दे सकते थे?

अय्यूब का दिल टूटा हुआ था। आयत 1 में अय्यूब ने कहा, ''मेरा प्राण निकलने पर है।'' अय्यूब का मन बेहद दु:खी था (17:7) और उसका यह दु:ख उसके बच्चे, सेवक और सम्पत्ति छिन जाने के कारण था। अय्यूब का मन उस शारीरिक वेदना के अत्यधिक होने से भी दु:खी था

जिसमें से वह गुज़र रहा था। इसके अलावा अय्यूब का मन अपने मित्रों की प्रतिक्रिया से और उनके कठोर आरोपों के कारण भी दु:खी था। आयत 2 में अय्यूब ने उन्हें ''ठट्ठा करने वाले'' कहा। उन्होंने अय्यूब के विरुद्ध आरोप लगाए थे और उसका दिल तोड़ा था। उसके ठट्ठा करने वाले मित्रों को यकीन नहीं था कि अपने निर्दोष होने की बात पर दृढ़ रहते हुए अय्यूब सच बोल रहा था। उसके मित्रों ने अपने दिमाग पर ज़ोर नहीं दिया न ही उन्होंने परमेश्वर के बारे में कोई और विचार किया कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ कैसे पेश आ सकता है। अय्यूब का मन दु:खी था क्योंकि परमेश्वर अभी तक खामोश था और उसने उसे उत्तर या राहत नहीं दी थी। अय्यूब को लगा कि परमेश्वर ने ही उसे चकनाचूर किया है और इसी कारण अय्यूब ने परमेश्वर से रज़ामंदी कर लेने को कहा (17:3)। इन सब कारणों के कारण अय्यूब को नहीं लगता था कि वह अधिक देर तक जीवित रहेगा (17:1, 2)। अय्यूब जैसे किसी व्यक्ति को जिसकी सारी आशा जाती रही हो, जिसका दिल टूट चुका हो, आप क्या सलाह देंगे?

जब हम किसी ऐसे व्यक्ति की सेवा कर रहे होते हैं जिसका मन दु:खी हो, तो कम से कम तीन सामान्य नियमों का पालन करना आवश्यक होता है।

करुणामय और सहानुभूति रखने वाले बनें। अय्यूब के मित्र उसकी निराशा, उसके दु:ख और पीड़ा में बुरी तरह से निर्दयी और बेदर्द थे। अय्यूब के मित्रों के विपरीत बाइबल बार-बार बताती है कि यीशु लोगों को असहाय, निराशा में डूबे और परेशान देखकर करुणा से भर जाता था (मत्ती 9:36; 14:14; 15:32; 20:34)। इफिसियों 4:32 हमें ''एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय'' होने को कहता है। परमेश्वर की प्रेरणा से फिलिप्पियों 2:1-5 में पौलुस ने लिखा:

> ... यदि ... कुछ शान्ति ... है ... दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपनी ही हित की नहीं, बरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे। जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।

कुलुस्सियों 3:12, 13 कहता है, ''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो; जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो।''

उन्हें सान्त्वना देने वाले वचन पढ़ाएं और पवित्र शास्त्र में दी गई प्रतिज्ञाओं पर ध्यान दिलाएं। अय्यूब के तीनों मित्र अपने दु:खी मित्र को सांत्वना देने के बजाय उसे भाषण देते रहे। अय्यूब के लिए यह कहीं अधिक सहायता मिलती यदि उसके मित्र उसका ध्यान ''सब प्रकार की शांति के परमेश्वर'' की ओर दिलाते (2 कुरिन्थियों 1:3; देखें भजन संहिता 86:15; 103:4; 119:156; 145:8)। सांत्वना देने वालों के रूप में हमारी पहुंच परमेश्वर के सम्पूर्ण किए हुए वचन तक है और हम दु:खी लोगों के सामने सांत्वना देने के उन वचनों को पढ़ सकते हैं। भजन संहिता 34:18-22 में दाऊद ने कहा, ''यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है। धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है। ... और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी न ठहरेगा।'' भजन संहिता 147:3 कहता है, ''वह खेदित मनवालों को चंगा करता है, और उनके शोक पर मरहम-पट्टी

बान्धता है।'' यह जानना कितना सुकून देने वाला है कि टूटे मन वाले लोग उस बड़े वैद्य के पास जा सकते हैं जो उनकी तकलीफ़ को समझता है। यशायाह की भविष्यवाणी हमें याद दिलाती है कि यीशु ''दु:खी पुरुष था, रोग से उसकी पहचान थी'' (यशायाह 53:3)। इब्रानियों के लेखक ने कहा कि परमेश्वर हमें ''कभी न छोड़ेगा और न कभी त्यागेगा'' (इब्रानियों 13:5)। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने उन लोगों के लिए आशिषें बताईं जो मन के दीन हैं और जो शोक करते हैं (मत्ती 5:3, 4)।

जब हम उन लोगों को जो दु:खी हों, तसल्ली देने की कोशिश करते हैं तो हमें शांति देने वाले उन वचनों को लेकर इन वचनों के साथ उन्हें तसल्ली देनी चाहिए। पौलुस ने कई कठिनाइयां सहीं (2 कुरिन्थियों 11:23-33), परन्तु उनमें से किसी को उसने उसे हराने नहीं दिया। दिलेरी और उम्मीद के साथ उसने लिखा:

> इसलिए जब हम पर ऐसी दया हुई, कि हमें यह सेवा मिली, तो हम हियाब नहीं छोड़ते। ... हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते। सताए तो जाते हैं; पर त्यागे नहीं जाते गिराए तो जाते हैं, पर नाश नहीं होते। ... यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नाश होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं। ... क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर हम ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है। ... इस में तो हम कहरते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें। ... और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कहरते रहते हैं; ... सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं (2 कुरिन्थियों 4:1-5:6)।

उन्हें याद दिलाएं कि हमारे जीवन की कहानी का अंतिम अध्याय अभी लिखा नहीं गया है। अय्यूब ने राहत के लिए प्रार्थना की और उसकी प्रार्थना का कोई उत्तर नहीं मिला। अय्यूब ने अपने मित्रों को चुनौती दी थी और उनकी दलीलों को सुना था परन्तु किसी बात से उसे कोई सहायता नहीं मिली। अय्यूब निराशा की गहराइयों में फिर से डूब गया और इस टूटे हुए जन ने चार प्रश्नों के साथ अपनी बातचीत यहां पर खत्म का दी। अय्यूब ने पूछा, ''तो मेरी आशा कहाँ रही? मेरी आशा किस के देखने में आएगी? क्या वह अधोलोक में उतर जाएगी? क्या उस समेत मुझे भी मिट्टी में विश्राम मिलेगा?'' (17:15, 16)। अय्यूब को अपनी दुविधा का कोई संतोषजनक हल नहीं मिला था, न ही उसे अपने मित्रों की ओर से कोई सांत्वना मिली थी, जिस कारण अय्यूब ने संकेत दिया कि क्या पता उसके उत्तर मृत्यु में और कब्र में जाने पर ही मिलें। अध्याय दु:खद टिप्पणी के साथ समाप्त होता है कि अय्यूब अभी भी अपने दु:ख पर सवाल कर रहा था; उसके मित्र अभी भी उसके साथ कठोर, बेदर्द और संवेदनाहीन बने हुए थे। बाइबल के,

या जीवन के सब अध्यायों का अंत इस सुन्दर, सुहाने वाक्य ''इसके बाद वे खुशी खुशी रहने लगे'' के साथ नहीं होता। अय्यूब के लिए अपनी कहानी के खत्म होने से पहले अभी और बहुत कुछ सहना बाकी था। परन्तु अय्यूब के जीवन का अंतिम अध्याय लिखा नहीं गया था, क्योंकि अंत में परमेश्वर ने अय्यूब के विश्वासी होने के लिए उसे आशीष देनी थी।

हम सभी किसी न किसी ऐसे व्यक्ति को जानते होंगे जो इस समय अपने जीवन के कठिन दौर से गुज़र रहा हो। जब उसे समझाने और तसल्ली देने का मौका मिले तो हमें उन्हें याद दिलाना चाहिए कि उनके जीवन का अंतिम अध्याय अभी लिखा नहीं गया है। हम उन्हें याद दिलाएं कि परमेश्वर वफ़ादारी को ईनाम देगा (इब्रानियों 11:6) और यीशु वफादारों को ''जीवन का मुकुट'' देगा (प्रकाशितवाक्य 2:10)। एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 322. [2]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 268. [3]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, द *हिब्रू ऐंड अरेमिक लैक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. ऐंड सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:720. [4]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 191. [5]हार्टले, 269–70. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 160–61. [7]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1241.